रिकॉर्ड:- दिल का सहारा टूट नां जाये.. ओम शान्ती प्रातः क्लास 17-1-67

शिव भगवानोवाच्य अपने सालीग्रामों प्रित। शिव और सालीग्रामों को तो सब मनुष्य जानते हैं। दोनों ही निराकार हैं। शिव बाबा, और सालीग्राम बच्चे। अब कृष्ण भगवानोवाच्य तो कह नही सकते है। भगवान एक ही होता है। तो शिव भगवानोवाच्य किसके प्रित? रूहानी बच्चों प्रित। बाप नें समझाया है अभी बच्चों को त्रीज्ञान है ही बाप सें। ब्रह्मा सें नही है। क्यों कि पतित पावन ज्ञान का सागर स्वर्ग का वर्सा देनें वाला वो ही ठहरा। याद भी उनको ही करना है। ब्रह्मा तो ठहरा उनका भाग्यशाली रथ। रथ दवारा ही बाप वर्सा देते हैं। ब्रह्मा वर्सा देनें वाला नही है। वो तो वर्सा लेने वाला है। तो बच्चों को अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करना है। मिसला समझो कि रथ को कोई तक्लीफ होती है। वा कोई कारण अकारण बच्चों को मुर्ली नही मिलती है तो क्या बच्चे अपनी मुरली नही चलासक्ते हैं। बच्चों का सारा अटेन्शान जाता है शिव बाबा तरफ। वो तो कब विमार पड़ नही सक्ते है। वो चाहें ब्रह्मा तन सें वा नही तो और कोई अच्छे बच्चे दवारा भी मुर्ली चलाये सक्ते हैं। और बच्चों को इतना ज्ञान मिला है। वो भी समझा सक्ते है। प्रदर्शनी में बच्चे कितना समझाते हैं। ज्ञान तो बच्चों में है नां। हर एक की बुधी में चित्रोंका ज्ञान भरा हुआ है। बच्चों को कोई अटक नही रह सक्ती है। समझो पोस्ट का ही आना-जाना बन्द हो जावे या स्ट्राईक हो जावे। फिर क्या करेंगे? ज्ञान तो बच्चों में है। समझाना है सतयुग था अभी तो कलियुग पुरानी दुनिया है। गीत भी कहते है कि इस पुरानी दुनिया में कोई सार नही है। इससें दिल नही लगानी है। नही तो सजा मिल जावेगी। बाप की याद सें सजायें मिटती जावेगी। ऐसा नां हो कि बाप की याद टूट जाये और फिर सजायें खानी पड़े। और पुरानी दुनिया में चले जावें। ऐसे तो ढेर गये है। बहुत है जिनको बाप तो याद भी नही है। पुरानी दुनिया सें ही दिल लग गई है। गीत भी सुना जमाना बहुत खराब है। कोई सें भी दिल लगाई तो सजायें बहुत खावेंगें। इस गीत में ज्ञान तो बड़ा अच्छा है। बच्चों को ज्ञान ही सुननाहै। भक्ति मार्ग के गीत भी नही सुननें है। भक्ति मार्ग मुर्दाबाद होना है। अभी तुम हो संगम युग पर। ज्ञान सागर बाप दवारा तुमको संगम पर ही ज्ञान मिलता है। दुनिया में यह किसीको भी पता नही है कि ज्ञान सागर एक है। वो जब ज्ञान देतें हैं तब ही मनुष्यों की सदगती होती है। सदगती दाता एक ही है। फिर उनकी ही मत पर चलना है। माया छोड़ती कोई को भी नही है। भूलें तो सबसें ही होती है। देह अभिमान के बाद ही कोई नां कोई भूल होती है। कोई समय काम वश हो जाते है। कोई क्रोध वश हो जाते है। मनसा में भी तूफान बहुत आते है। प्यार करना यह करना। कोई के शरीर सें भी दिल नही लगानी है। बाप कहते है अपनें को आत्मा समझो तो शरीर का भान भी नही रहे। नही तोबाप की आज्ञा उल्लंघन हो जाती है। देह अंहकार रहनें सें नुक्सान बहुत होता है। इसलिये ही देह सहित सब कुछ भूल जाना है। सिर्फ बाप को और घर को याद करना है। अब हमारी मुसाफिरी पूरी हुई छी छी रावण राज्य सें। अब जाना है बाप के पास। उनको ही याद करनाहै। आत्माओं का बाप समझाते है कि शरीरसें काम करते हुये याद मुझे करो तो विकर्म भस्म हो जावेगें। रहता तो बहुत सहज है। यह भी समझाते है कि तुमसें भूलें होती रहती हैं। परन्तु ऐसे नां हों कि भूलों में फंस ही जाओ। अपना ही कान पकड़ना चाहिये कि फिर यह भूल नही करेंगें। पुरुषार्थ करना चाहिये। अगर बड़ी भूल होती है तो समझना चाहिये कि हमारा ही नुक्सान होगा। भूलें करते ही दुर्गती को पाया है ना। कितनी बड़ी सीढ़ी उतर कर क्या बनें है। आगें तो यह ज्ञान नही था। अभी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ज्ञान सें सब प्रवीण हो गये है। जितना हो सकें अन्तर्मुख होकर रहना है। मुख सें कुछ कहना नां है। गीत आद भी नही सुनना है क्यों कि हमतो अब भक्ति मार्ग के दुश्मन ठहरे। कहते भी है भक्ति मुर्दाबाद। हम तो रावण राज्य का विनाश करना चाहतें है तो फिर उससें दिल कैसे लगावें? यह शरीर भी रावण सम्प्रदाय का है। तो हम रावण सम्प्रदाय को क्यों याद करें। एक राम को ही याद करना है। बाप कहते है मुझे याद करतें रहो तो तुम्हारे विकर्म भस्म हो जावेगें। पति वृता अथवा भगवान

ही याद करेंगें। अपनी देह को भी याद नही करेंगें। कोई भी देह धारी को याद नही करना है। देह सहित सबका सन्यास करना है। फिर औरों की देह से हम क्यों लागत लगावें। कोई से भी लागत होगी तो उनकी याद आती रहेगी। फिर ईश्वर याद आ नही सकते है। पतिज्ञा तोड़ते है तो फिर सजायें भी बहुत खानी पड़ती है। पद भी भ्रष्ट हो जाता है। इसलिये जितना हो सकें बापको ही याद करना है। माया तो बहुत धोखेबाज़ है। कोई भी हालत में माया से अपने को बचाना है। देह अभिमान की बहुत बड़ी बिमारी है।

बाप कहते है अब देही अभिमानी बनो। बाप को याद करो तो कि देह अभिमान की बिमारी छूट जावें। सारा दिन देह अभिमान में रहते है। बाप को याद बड़ा मुशकल करते है। बाबा नें समझाया है कम कर है, दिल यार है, जैसे आशुक माशूक। धन्धा आद तो करते रहते है अपने माशूक को याद करते रहते है। देह अभिमानी देह को ही यादकरते है। जिनसे प्रीत लग जाती है। अब आत्मा की परमात्मा से प्रीत लगी तो उनको ही याद करना चाहिये नां। तुम बच्चों की ऐम आब्जेक्ट ही है कि हमको देवी देवता बनना है। उसकें लिये पुरुषार्थ करना है। बाप कहते है मुझे याद करो तो विकर्म भस्म हो जावें। माया धोखा तो जरूर देगी। अपनें को उससे छुड़ाना है, नही तो फंस मरेंगें। फिर ग्लानी भी होगी। नुकसान भी बहुत होगा। बहुत सेन्टर्स से समाचार आता है समझते है बाबा नेंकहा है, कि अब भट्ठा करो। जैसे करांची में तुम्हारा चला था।

वो तो था बच्चों को पुरुषार्थ करवाना। दिन में याद नही करते है तो रात को करो। उस समय तुम भठ्ठी में थे। तुमको कोई धन्धा आद तो थाही नही। धन्धें वाले थोड़ई ऐसे बैठ सकते है। तुम्हारी तो दूसरी बात थी। और कोई धन्धा ही नही था तो इस कमाई में लग जाते थे। अब बाप कहते है वो भठी ड्रामा में एक ही बार थी। फिर कितने उन में से भी कट हो गये। बाकी थोड़ै सविसिबुल निकल बाकी कितने कच्चे निकल पड़े। रूपयों में भी ऐसे ही कच्चे पक्के निकल पड़ते है। नोट निकालते है। उनमें भीबहुत निकम्मेहो जाते है।

विलायत में भी ऐसे ही ठगते है। ठगी तो जहां तहां लगी रही है। रावण राज्य है नां। पहले-2 थासूर्यवंशी राज्य। फिर चन्द्रवंशी, रामको चन्द्रवंशी क्यों कहा जाता है? त्रेता क्यों दिया है? यहभी कोई नही जानते है। जबकि बाप बाप आकर ज्ञान दें। यह भी तुम ब्रहमा कुमार कुमारियों को ही मालूम है। एक तरफ है सारा भारत। उसमें भी सन्यासी लोग तो ऐसे है जो बात ही मत पूछो। यह भी इससें डरते है। क्यों कि सुनते है गुरू का निन्दक ठौर नां पावें। अब तुमको ज्ञान मिला है। शास्त्रों में है ही कर्मकाण्ड की बातें। शास्त्र है सब भक्ति मार्ग के। वास्तव में ज्ञान का शास्त्र एक गीता ही है। उसमें ही ज्ञान है। और कोई में ज्ञान नही है। गीता में है भगवान का ज्ञान। अब ज्ञान किसको कहा जाता है यह भी कदर लोग जानते नही है। वण्डरफुल बात है नां। अभी बाप नें समझाया है तो वण्डर लगता है। क्रिश्चियन लोग जानते है क्राईस्ट नें गाया। तो उनको ही याद करेंगें। गीता में तो कृष्ण का नाम डाल बड़ी भूल कर दी है। अभी तुम्हारी यह बात बहुत सुनेंगे। ओपीनियनस भी हिन्दी और इंगलिश में छपानी चाहिये। यह तो बहुत चाहिये। बाहर में जावेगी तो सब सुनेंगे कि ब्रहमा कुमारियों नें सिद्ध कर दिया है कि गीता का भगवान निराकार परमात्मा है। यह समझनें से फिर सर्वव्यापी का ज्ञान उड़ जावेगा। ऐसे तो पत्थर बुधी है जो लिख कर भी देते है तब भी समझते ही नही है। आकर समझना चाहिये नां कि भगवान तो हमारा बाप ठहरा। उनसे जरूर राजयोगका वर्सा मिला होगा। श्री कृष्ण तो है ही सतयुग का पहला प्रिन्स। यह भी बहुतों को पता नही है नही तो कृष्ण को दवापर में नही ले जाते। कितना भी समझाओ फिर भी कदर बुधी समझते ही नही है।

बाप समझाते यह है बड़ी वण्डरफुल बातें है। आत्मा की। इसमें अविनाशी पार्ट है। इन गुहय बातों को अच्छे-2बच्चे भी समझते नही हैं। अपने को यथार्थ रीत आत्मा समझो। बाप भी बिन्दी मिसल है। वो ज्ञान का सागर है, इस रीत बैठ लव से याद करें यह बड़ा मुशकल है। मोटे खयालात से नही। इसमें महीन बुधी से काम लेना होता है। इस आत्मा में हमारा बाप आया हुआ है। वो बीज रूप हमको नालेज्ज सुना रहे है

धारण भी मुझ छोटी आत्मा में ही होता है। ऐसे बहुत जो नही समझते है मोटी रीती जरूर कह देते है हम आत्मा और बाप परमात्मा। यथार्थ रीती वुध्धी में आता ही नही है। ना से तो मोटी रीती याद करना भी ठीक है। परन्तु वो याद जास्ती फलदायक नही होती है। वो कम। वो इतना ऊंच पद पा नही सकेंगे। इसमें वडी मेहनत है कि मैं आत्मा छोटी बिन्दी हू। बावा भी इतना ही छोटा है। उनमें सारा ज्ञान है। यह भी तुम यहां वैठे हो, वुधी में आता है, चलते फिरते वो भी भूल जाता है। सारा दिन वो ही चिन्तन रहे वो है सच्ची-2याद। कोई सच वताते नही है कि हम कैसे याद करते है। चार्ट मेल भेजते है परन्तु यह नही लिखते है कि कैसे अपने को भी बिन्दी समझ बाप को भी बिन्दी समझ याद करते है। हिसाव से पूरा लिखते नही है। भल वहुत अच्छी-2मुरली चलाते है परन्तु योग में वहुत कम। देह अभिमान वहुत है। इस गुप्त वात को समझते नही है। सिमरण नही करते । जिस ही याद से पावन बनना है, वो याद है नही। पहले तो कर्मातीत अवस्था चाहिये नां। वो ही ऊंच पद पा सकेंगे। बाकी मुरली वजाने वाले तो ढेर है। बावा जानते है योग में रह नही सकते है। देह अभिमान की विमारी भी जव छूटे तव नां। माया के तूफान तो आवेंगे तुम्हारा काम है अच्छी रीतयाद करना। विश्व का मालिक वनना कोई मासी का घर थोड़ेई है। वो अल्पकाल के मर्तवे लिये भी कितना पढ़ते है। सौंसि आफ इन्कम अभी हुआ है। आगे थोड़ेई वैरिस्टर आद इतना कमाते थे। अभी कितनी कमाई हो गई है। तो अव वाप समझाते है एक तो अपने कल्याण अर्थ अपने को आत्मा समझो, यथार्थ रीत मुझ वाप को याद करो, और त्रिमूर्ती शिव का परिचय औरों को भी देना है। सिर्फ शिव से समझेंगे नही। त्रिमूर्ती तो जरूर चाहिये। मुख्य है ही दो चित्र। त्रिमूर्ती और झाड़। सीढ़ी से भी झाड़ में जास्ती नालेज है। एक तरफ त्रिमूर्ती गोला दूसरी तरफ झाड़। यह पाण्डव सैना का झण्डा होना चाहिये। ड्रामा और झाड़ की नालेज भी वाप देते है। लं.न. और विष्णु आद कौन है यह कोई कदर वुधी समझते थोड़ेई है। महा लक्ष्मी की पूजा करते है। समझते है लक्ष्मी आवेगी, अव लक्ष्मी को धन कहां से आवेगा। 4भुजा वाले 8भुजा वाले कितने ही चित्र वना देते है। समझते कुछ भी नही है। जैसे कि पूरे टट् है। 8, 10 भुजा वाले कोई मनुष्य तो होता ही नही है। जिसको जो आया सो वनाया। वस फिर वो ही चल पड़ा। कोई ने मत दी कि हनूमान की पूजा करो। वस चल पड़े। दिखाते है संजीवनी वूटी ले आया। इनका भी अर्थ समझाते है। संजीवनी वूटी तो यह है मनमनाभव। महावीर तो मनुष्य है। जानवर नही। वावा कोई जानवर नही जो वूटी ले आया है। विचार किया जाता है जव तक ब्राह्मण नां वनें। वाप का परिचय जव तक नां मिलेतो वैध नाट अपनी है। मर्तवे का मनुष्यों को कितना अभिमान है। उनको तो वडी मुश्किलात है। राजाई स्थापन करने में कितनी मेहनत लगती है। वो है वाहूवल। यह है योगवल। यह वातें शास्त्रों में तो है ही नही। वास्तव में तुम कोई शास्त्र रिफर भी नही कर सकते हो। अगर तुमको कोई कहते है कि तुम शास्त्रों को मानते हो? वोलो हां यह तो सव भक्ति मार्ग के शास्त्र है। भक्ति मार्ग है ही दुर्गती मार्ग। वो अभी पूरा हुआ। अभी हम ज्ञान मार्ग पर चल रहे है। ज्ञान देने वाला ज्ञान सागर वाप एक ही है। इसको रूहानी ज्ञान कहा जाता है। रूह वैठ रूहों को ज्ञान सुनाते है। वो मनुष्य मनुष्यों को देते है। यह है रूहानी नालेज। मनुष्य कभी स्प्रीचुअल नालेज सुनाही नही सकते है। ज्ञान का सागर पतित पावन लिवरेटर, सदगती दाता वो एक ही है। और वाकी सव है दुर्गती दाता। नाम वड़े रख दिये है। श्री-2 108जगत गुरू। अव वावा डायरेक्शन तो देते है। परन्तु कोई ऐसे हड्डी वेवर नही है। जो कि वैठ कर अच्छी रीत लिखें। तुम अखवार में भी डाल सकते हो। जगत गुरू इतने फालोवरस का अपने को कहलाते है, परन्तु यह तो जगत की सदगती करें विना अपने आप का जीव घात कर देंगे तो सारेजगत को सदगती कौन देगा। उनके फालोवरस का क्या हाल होगा। लिखना चाहिये, यह भक्ति मार्ग दुर्गती मार्ग के गुरू है। ऐसे कोई की हिम्मत नही है तो क्या कोई लिखे। ना ऊंच अवस्था को पाया है। जो वुधी में वैठे। वावा तो समझाते रहते हैयह -2करो। अव

14-10-67 ... 101